III

Date: / /

लघु सिंचाई →

भारतीय किसान मौसम और वर्षा पर निर्भर रहा करते थे। समय पर वर्षा नहीं होने से खेती और फसल प्रभावित होती थी। अतः लघु सिंचाई के लिए भूगर्भ जल परियोजनाओं को लागू किया गया जिसमें पम्प-सेट, ट्यूब वेल आदि की गयी।

उर्वरकों का प्रयोग →

भारतीय हरित क्रान्ति में उर्वरकों के प्रयोग पर बल दिया गया। देश में रासायनिक खाद की वृद्धि के लिए नए कारखाने लगाए गए आयात की नीति अपनायी गयी तथा पुराने कारखानों का विस्तार किया गया।

कृषि उत्पादनों का मूल्य निर्धारण →

कृषकों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए यह एक आवश्यक कदम था। कृषकों को अपने उत्पादन का उचित मूल्य दिलाने तथा उन्हें शोषण से मुक्त करने के लिए आवश्यक था कि सरकार द्वारा मूल्यों को संरक्षण प्राप्त हो और वे गिरने नहीं पाएँ। यह कार्य कृषि मूल्य आयोग को सौंपा गया सरकार द्वारा खरीद एवं बिक्री मूल्य नियंत्रित होने के

Date: / /

फलस्वरुप कृषकों को काफी राहत मिली।

विभिन्न निगमों की स्थापना →

कृषकों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए यह एक आवश्यक कदम था। कृषकों को अपने उत्पादन का उचित मूल्य दिलाने तथा उन्हें शोषण से मुक्त करने के लिए आवश्यक था कि सरकार→

ऊष्मा कृषि को बढ़ावा →

वर्षा तथा सिंचाई सुविधाओं के अभाव में कृषकों को काफी परेशानी होती तथा आर्थिक विषमताओं को झेलना भी पड़ता। अतः कृषकों को काफी परेशानी होती तथा आर्थिक विषमताओं को झेलना भी पड़ता। अतः कृषकों को ऊष्मा खेती के लिए प्रेरित किया गया तथा सम्बन्धित प्रशिक्षण भी दिया गया।

ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम →

ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त निर्धनता से जूझने के लिए हमारे देश में ऐसी योजनाओं की आवश्यकता अनुभव की गयी जिनसे बेरोजगारी दूर हो सके सन् 1977 में प्रस्तुत योजना आयोग की रिपोर्ट के अनुसार भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में 48% तथा नगरीय क्षेत्रों में 41% लोग गरीबी थे।

प्रबन्धक
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया
28/1/22